सच्ची दीपावली

कार्त्तिक की अमावस्या को भारतवर्ष के घर- घर में प्रकाश दीप जगमगा उठते हो और बाल- वृद्ध आनन्द से भर जाते हो। सभी अपने- अपने घरों की तथा कपड़ों की सफ़ाई करते हो। मान्यता है कि धन की देवी श्री लक्ष्मी इस रात्रि में भ्रमण करती हो और अलौकिक गृहों को धन- धान्य से परिपूर्ण कर देती हो। अपने भाग्य की परीक्षा लेने के लिए लोग जुआ भी खेलते हो। रात्रि के अन्तिम प्रहर में माताएं सूप की कर्कश ध्वनि से दरिद्रता को निकालती हो तथा गाँव के बाहर सामूहिक रूप से उसे जला देती हो।

क्या आपने कभी विचार किया है कि श्री लक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रति वर्ष दीपमाला जला कर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी क्यों हमसे रूठ गयी हो? जलते हुए दीप उनको आकृष्ट क्यों नह° कर पाते? वे कौन- सा दीप जलाना चाहती है? वस्तुत: आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य की अन्तरात्मा तमसाच्छन्न है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है? लेकिन कितनी विडम्बना है कि आत्म- दीप प्रज्ज्वलित कर कमल पुष्प सदृश अनासक्त बन कमलासीन श्री लक्ष्मी का आह्वान करने की जगह हम मिट्टी के दीप जला कर बच्चों का खेल खेलते रहते हो। मन- मन्दिर की सफ़ाई से ही हम खुश हो जाते हो। तभी तो श्री लक्ष्मी हमसे रूठ गयी हो। कमल सदृश बन कर हम कमला को प्राप्त कर सकते हो।

अमावस्या की काली रात्रि की तरह आज चतुर्ग्रदक घोर अज्ञान अन्धकार छाया हुआ है। कह° कुछ सूझ नह° रहा है। मत मतान्तर के जाल में मानव मात्र भ्रमित है। सभी आत्माओं की ज्योति बुझ चुकी है। ऐसे समय में सदा जागती ज्योति निराकार परमपिता परमात्मा शिव सर्वात्माओं की ज्योति जगाने के लिए कल्प पूर्व की भांति इस धराधाम पर अवतरित हो चुके हो और प्राय:लोप गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हो। निश्चयकारी बन उस सदा जागती ज्योति से अपनी आत्मा का दीप जगा कर ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हो। तब ही इस देवभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी- श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना होगी जहाँ रत्न जड़ित स्वर्ण महल होंगे और घी- दूध की नदियाँ बहेंगी। इस युगान्तरकारी घटना की पावन स्मृति में ही हम दीपावली का त्योहार मनाते हो। इस अवसर पर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीप जलाया जाता है और उसी से अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी देवता के मन्दिर में सदा दीप नह° जलता है लेकिन आज भी भगवान् विश्वनाथ के मन्दिर में अनवरत दीप जलता रहता है क्योंकि एक मात्र निराकार परमात्मा शिव ही सदा जागती ज्योति हो।

निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर जब हम निश्चयकारी बनते हो तो हमारा एक नया जन्म 'मरजीवा जन्म' होता है। हमारे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध समाप्त हो जाते हो तथा नये दैवी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध बनते हो। अवढर दानी, भेलानाथ भगवान् शिव के साथ व्यापार करने वाले आध्यात्मिक साधकों का परम कर्त्तव्य है कि अब वे आसुरी अवगुणों का खाता बन्द कर दैवी गुणों के लेन- देन का खाता खोलें जिससे आगामी सतयुगी सृष्टि में वे श्री लक्ष्मी का वरण कर सकें।

दीपावली के दिन जुआ खेलने का बहुत महत्व है। कहते हो कि जो इस दिन जुआ नह° खेलता है उसकी अधम- गति होती है। इसका भी गम्भीर आध्यात्मिक रहस्य है। जुआ में कुछ सम्पत्ति हम दाव पर लगाते हो जो कई गुना होकर हमें मिलती है। पावन सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि पर अवतरित होते हो तो वे हम जीवात्माओं को आदेश देते हो कि अपने कौड़ी तुल्य तन- मन- धन को ईýरीय सेवा में लगा दो तो २१ जन्मों के लिए तुमको कंचन काया, सतोप्रधान मन और अखुट धन- सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। धन्य हो वे नर- नारी जो इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगम युग पर ऐसा ईश्वरीय जुआ खेलते हो। बाकी तो सभी 'विषय-सागर' में गोता खाने वाले अधम और पशु- तुल्य हो।

दीपावली के आध्यात्मिक रहस्यों को न जानने के कारण आज मनुष्य उसे सामाजिक उत्सव के रूप में ही मानते हो और महान् आध्यात्मिक उन्नति से वंचित रह जाते हो। कहाँ यह ईश्वरीय जुआ और कहाँ वह स्थूल जुआ जिसके कारण कितने लोगों को जेल की यातना सहनी पड़ती है।

आइये अब हम प्रतिज्ञा करें कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मन्दिर की सफ़ाई कर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव से आत्मा की ज्योति प्रज्ज्वलित करेंगे, 'आसुरी अवगुणों और संस्कारों' का खाता बन्द कर दैवी गुण सम्पन्न बनेंगे तथा अपने तन- मन- धन को मानव मात्र के आध्यात्मिक उत्थान में लगा देंगे। फिर तो इस पुण्यभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी- श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना हो जायेगी जहाँ दु:ख अशान्ति का नामोनिशान भी नह° रहेगा। शेर- बकरी एक घाट पर जल पियेंगे और अखुट धन- सम्पत्ति से नर- नारी मालामाल हो जायेंगे। इतना महान् अन्तर है मिट्टी के जड़ दीप जलाने और चैतन्य आत्मा की ज्योति प्रज्ज्वलित करने में।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचस

www.bkvarta.com

www.bkvarta.com (Brahamkumaris First Hindi Web Portal)